ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

मिज़ो की लोक कथाओं में धार्मिक एवं सांस्कृतिक अभिप्रायों का अध्ययन

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)23-27
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

Dr.Elizabethi
Assistant Professor
Mizoram Hindi Training College,Durtlang North, Aizawl, Mizoram.

Corresponding Author :
Dr.Elizabethi
Assistant Professor
Mizoram Hindi Training College,Durtlang North, Aizawl, Mizoram.

मिज़ो जनजाति के लोग उपन्यास, घटना और विभिन्न प्रकार की कथाओं को कहानी का नाम देते हैं तथा अपने पूर्वजनों से प्राप्त अलिखित कहानी को लोक कथा का नाम देते हैं। मिज़ो कहानियों में लोक कथा का सबसे बड़ा खंड है, क्योंकि इसमें जानवरों की कहानी, पशु पक्षियों की कहानी जिसमें पशु पक्षियों को मानवों की भाषा में बात करवाई जाती है, परियों की कहानी, राजा–रानी की कहानी, नदियों की कहानी, भूत-प्रेत की कहानी, बच्चों की कहानी, अप्सराओं की कहानी आदि ऐसी कई कहानियों का मिश्रण है जिसे हमने अपने पूर्वजनों द्वारा मौखिक में अर्थात अलिखित रूप प्राप्त किए हैं और हम इसे अपने बच्चों को पोता-पोती को सुनते हैं और वे भी इसी को अपने बच्चों को फिर सुनते जाते हैं।

बी.ललथंगलियाना के अनुसार, “लोक कथा वह है जिसकी रचना करने वाले अर्थात कहने वाले का किसी को पता नहीं है। बात बनाने में माहिर तथा बात को बढ़ाने–चढ़ाने में माहिर लोग लोक कथा को थोड़ा और जोड़–घटाकर तोड़-मरोड़कर, सुनाते जाते हैं। इसकी रूप थोड़ा बदल जाता है किन्तु मूल कथा वैसी की वैसी रहती है। कुछ कथाएँ तो एसी भी रही होंगी जिन्हें हमारे पूर्वज बड़े चाव से सुनाते रहें होंगे किन्तु जिनको शायद लोग आज भुला चुके होंगे इसलिए जिस कहानी को अब भी हम सुनते तथा सुनाते आ रहे हैं वे मानव के यथार्थ जीवन को प्रकट करने वाली उनके दैनिक जीवन तथा विशेष स्थान से गहरा संबंद रखने वाली होंगी तथा आने वाली पीढ़ी के लिए अच्छी सीख एवं कल्पना को आसली रूप देने में सक्षम होंगे। एसी कहानियाँ, कथाएँ तो कई साल बीत जाने पर भी लुप्त नहीं हुई। यही तो लोक कथा है। ये लोक कथाएँ बहुत ही कीमती और अमूल्य संपत्ति काही जा सकती हैं। मिज़ो लोक कथाएँ बहुत रूचिकर होती हैं जिसे बच्चे से बूढ़े तक बड़े चव से सुनते हैं।’

हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि पूर्वजनों ने कहानी सुनाना, गढ़ना कब शुरू की थी किन्तु कहानी से संबन्धित एकदम सटीक और सुंदर, कथा के बीच–बीच में, अंत आदि में गाए जाने वाले गीतों के कारण अनुमान लगाया जा सकता है कि कहानी से गीत की रचना पहले की गई थी।

मिज़ो की लोक कथा को दो भागों में बांटा जा सकता है:

1. गद्य रूप में प्रचलित लोक कथाएँ। 2. पद्य रूप में प्रचलित लोक कथाएँ।

अ) गद्य रूप में प्रचलित लोक कथाएँ – इस वर्ग में इस प्रकार की लोक कथाएँ आ सकती हैं –

- धार्मिक व व्रतोत्सव संबंधी
- सामाजिक
- सांस्कृतिक
- ऐतिहासिक
- मनवेतर प्राणियों की कहानी
- परिस्थिति या घटना प्रधान

आ) पद्य रूप में प्रचलित लोक कथाएँ

- गाथा
- व्यग्यात्मक
- प्रेम गाथा

धार्मिक व व्रतोत्सव संबंधी कहानियाँ – जन्म लेते ही इंसान कुछ न कुछ सोचने लगता है। जैसे वह बढ़ता जाता है वैसे वैसे अनुभव करने लगता है कि कुछ उसके साथ घट रहा है उसके पीछे कोई है जो बहुत ही शक्तिशाली है, जिसको वह देख नहीं सकता, छू नहीं सकता किन्तु उसके होने का अभ्यास उसे हो जाता है। उसी को खुश करने की चेष्टा करता है, उसकी पूजा करता है। मिज़ो लोक कथाएँ भी इसके अनुसार चलती हैं। ये धार्मिक कहानियाँ उपदेशात्मक होती हैं। डॉ.लल्त्लुयांगलियाना के अनुसार "मिज़ो लोक कथाओं में धार्मिक कहानियाँ कई हैं किन्तु जाति के आदि मानव जिसकी पूजा करते थे, उनका धार्मिक विश्वास क्या था आदि का वर्णन करना ठीक होगा क्योंकि इनकी धार्मिक लोक कथाएँ इन पर आधारित हैं" मिज़ो जनजाति का अपना निश्चित धर्म है इस धर्म की उत्पत्ति रून नदी ओर टीआऊ नदी में (जो अभी बर्मा में है) 1300 -1700 ए.डी. के लगभग हुई थी।

धार्मिक मूलक अभिप्राय-

देवमूलक :

1. सूरज को देवता मानना।
2. नभ को देवना मानना।
3. पृथ्वी के सात परतों में देवता के निवास में विश्वास
4. लसी अर्थात प्रेतनी को देवता मानना।
5. बरगत के पेड़ को देवता मानना।
6. जल देवता होने का विश्वास और उसकी पूजा करना।
7. मरने के बाद आत्मा का तारे बन जाना।
8. रिहदिल को देवता मानना।
9. मर जाने पर हमेशा "रिहदिल" जाना।
10. मरते ही सिर से आत्मा का निकाल जाना और छट पार करते हुये बाहर निकालकर सात दिनों तक घर के आस पास भटकना।
11. उनका मानना है सात दिनों तक आत्मा भटकने के बाद रिहदिल जाएगी और उसके पश्चात पत्थर जिस पर पैर पड़ने से दूसरा सिरा उठ जाता है उस पत्थर से होती हुयी उस पहाड़ पर चढ़ जाएगी जहां से मनुष्य का गाव दिखना है। वहाँ जाकर उन्हे घर की बहुत याद आती है। फिर आगे चलकर एक विशेष प्रकार का फूल जिसे "होइलोपर" कहा जाता है तोड़ते हैं बालों में लगते हैं फिर एक विशेष प्रकार का पनि जिसे "लुङ्ग्लोःतुई" कहा जाता है। पीते हैं उसे पीने के बाद तो वे मानवीय सोच भूलकर आत्मीय सोच की दुनिया में रहते हैं। घर की याद मन से निकाल जाती है। फिर वे वहाँ से मृत – गाँव चले हैं।

1. देवता द्वारा मनुष्य की सहायता करना।

2. जब कोई कष्ट में होता था तो उसका कारण "दुष्ट – आत्मा का श्राप" समझकर मुर्गी तथा अन्य पशु की बलि चढ़ाकर खुश किया जाता था।

3. साँप को देवता मानना। 4. ब्रहम को देवता मानना।

योनि परिवर्तन मूलक

1. आसमान से आए दो नौजवान का साधारण मनुष्यों का रूप धारण कर छह बहनों के पास पृथ्वी पर आना।
2. दधारण करना।
3. आसमान के जवानों की सेना का तूफान और वर्षा के रूप में धरती पर आना।
4. ङ्गलसिया की पत्नी का जब चाहे मनुष्य जब चाहे आत्मा बन जाना।
5. लड़के का छोटा बच्चा बन जाना।
6. राहतेआ का झींगुर का उड़ जाना।
7. गाइतेई के पिताजी का साँप बनकर रूप धारण करना।

देव – व्यवहार मूलक –

1. कुङ्ओढ़ी और उसके बचाने वालों को देखकर देवी देवता द्वारा उनकी सहायता करते रहना।

चमत्कार मूलक –

1. पेड़ के पत्ते को मसलकर शव के सिर से पैर तक पोतकर शव को जीवित करना।
2. ङ्गलसिया को पत्नी प्रेतात्मा द्वारा लोगों को गूंगा बनाकर उन्हें पुनः आवाज लौटाना।
3. दो अनाथ भाईयों का बुढ़िया के आशीर्वाद से धान की कटाई न हो पाना अर्थात दोनों का अमीर बन जाना।
4. वन देवता की मदद से राधामन तथा धनपती को शेर ने मारा, मारे हुये दोस्त पुनः जीवित हो उठे।
5. लड़के द्वारा लाल पंख वाले कबूतर को मारने से चुड़ैल का मर जाना।

अवतार मूलक –

1. लियांचेरा के स्वपन में लसी युवती का दैवी दंग से प्रकट होना।
2. प्रेतिनी (जानवरों की देवी रानी) का मनुष्य रूप में प्रकट होना।
3. साँप देवता की बुढ़िया के रूप में दो अनाथ भाईयों की मदद करना।

मानव कल्याणफरक –

1. जल देवता का प्रसन्न होकर अपनी बेटी की शादी हाइहथङ्गा से करना।
2. भगवान की बेटी (अप्सरा) द्वारा वानहुकपा को जादूगरी सिखाना।
3. लसी का राजा ललचुंगनुंगा का लियांचेरा से खुश होकर उसे अच्छा शिकारी बनाना।
4. दो अनाथ भाईयों को साँप देवता द्वारा अमीर बनाया जाना।

पूर्वजन्म संबंधी मूलक – 1. मरने के बाद तारे बन जाना।

सांस्कृतिक कहानियाँ :

संस्कृति से संबन्धित कथाओं को सांस्कृतिक कहानी नाम दिया जाता है। मिज़ो लड़की, युवतियाँ सुबह उठकर धान कूटती हैं और उसे साफ करती हैं। दिन में वे खेत पर जाती हैं और रात को सूत कातती और कपड़े बुनती है। युवक रात को युवतियों के घर जाते हैं

और युवतियाँ कपड़े बुनती हुई उनसे बातचीत करती हैं। उनके लिए चाय बनाती हैं जिस घर में युवकों का जमघट बना रहता है उस युवती को लोग सुशील और अच्छी समझते हैं।युवती यदि कपड़े बुनने और सूत काटने में बहुत होशियार है तो लोगों में उसकी इज्जत होती है इन सबकी झलक सांस्कृतिक कथाओं में पाया जाता है।

इसी तरह पुरुष भी बाँस से कई तरह की टोकरियाँ या टोपी आदि बनाते हैं। इन टोकरियों से वे धान आदि दोते हैं और लंबे लंबे बाँस नली के आकार का जिसे बीच में छेद किया जाता है से पानी दोते और भरते हैं। ये बाँस लगभग एक हाथ से कुछ लंबे होते हैं।

लड़कियां शादी में अपने हाथ का बना एक विशेष प्रकार का कपड़ा ले जाती हैं जिसे 'पुआन्दुम' जोलपूअन के नाम से जाना जाता है। यह लाल और काले धागे से बना धारीदार होता है। किसी की मृत्यु हो जाने पर शव को पुआनदुम से दका जाता है। इन सबकी झलक मिज़ो कथाओं में दिखाई देती है।

मिज़ो जनजाति के आदिवासी लोग मांस बड़े चाव से खाते थे और शराब पीना बुरा नहीं मानते थे। शुरू से ही वे नाचने - गाने में रुचि रखते थे। चेरो नृत्य बाँस के सहारे नाचते हैं जो अब तक पूरे भारत में मशहूर है। इसके अलावा समूह नृत्य में एक दूसरे का हाथ या कंधा पकड़कर झूम-झूमकर गाते हुये नाचते हैं। उसे 'चाई' कहा जाता हैं। 'मिज़ो जनजाति को सिंगिंग ट्राइब कहा जाता है।

इसलिए इनकी कथा में बीच बीच में गीत गाकर अपना मनोभाव प्रकट किया गया है। एसी कहानियाँ सांस्कृतिक कहानियाँ के वर्ग में रखी जाती हैं।

मिज़ो की लोक कथाओं के सांस्कृतिक अभिप्रायों का आध्ययन :

धार्मिक विश्वास मूलक अभिप्राय-

1. सूरज को देवता मानकर पूजना।
2. पुवाना को परब्रह्म मानना जो लोक में है।
3. मरने के बाद आत्मा का लुङ्ग्लोःतुई पीकर पृथ्वी लोक को भुला देना।
4. नभ को पूजना
5. मुर्गी या मुर्गी के खून से किसी मरीज को ठीक करना।
6. पृथ्वी अर्थात भूमि को पूजना।
7. पुण्य का मीठा फल प्राप्त करना।
8. धन - धान्य एवं स्वर्ग मोक्ष की प्राप्ति हेतु दान पुण्य करना
9. कष्ट देने वाला दुष्ट आत्मा को खुश करना और संतुष्ट रखना आवश्यक मानना। पशु की बलि चढ़ाकर लोगों का उपचार करना।

सामाजिक विश्वास मूलक अभिप्राय –

1. बड़ोंकी इज्जत करना।
2. भाग्य के भरोसे होना।
3. अनाथों का तिरस्कार।
4. विधवाओं का तिरस्कार।
5. राजा - रानी को सम्मान देना।
6. मिथुन,सूअर जैसे जानवरों को संपत्ति मानना।
7. जादू- टोना करना, किन्तु जादूगरों का भय मानना।
8. जैसे करोगे वैसा भरोगे।
9. परोपकार की भावना बचपन से ही विकसित करना।
10. साहसी, वीर युद्ध में निपूर्ण होना चाहिए। जिससे की दुश्मनों के द्वारा अचानक हमला हो जाने पर भी पीछे न हटे। क्योंकि मिज़ो जन जाति के लोग अपने वंश, गाँव की रक्षा में तथा अपना क्षेत्र बढ़ाने के लिए लड़ते रहते थे।
11. उच्च जाति से नीच जाति के ब्याह को बुरा माना जाना।
12. मिलकर शिकार करना, जो कुछ मिले उसे आपस में बाँटना।

अंध विश्वास संबंधी अभिप्राय-

1. बाढ़ को रोकने हेतु लड़की की बलि चढ़ाना।
2. नदी में देवता का होना।

3. मर जाने के बाद आसमान में सितारे बनना। 4. बीमार पड़ने का कारण भूतप्रेत तथा प्रेतिनी का श्राप मानना।

5. मर जाने के बाद सात दिन तक आत्मा का घर के पास भटकना।

सामाजिक मर्यादा मूलक अभिप्राय –

1. अतिथि सत्कार। 2. परोपकार की भावना। 3. यज्ञ से इज्जत पाना।

चमत्कार मूलक अभिप्राय –

1. अंगूठे से लड़की उत्पन्न होना। 2. लड़के का चोर बन जाना। 3. लड़के का भौरा बन जाना।

4. एक पत्र वाले पेड़ के पत्ते को मसलकर लगाने से शरीर से सिर का जुड़ जाना और जीवित हो उठना।

संख्यामूलक अभिप्राय –

1. सात भाई। 2. छह भाई। 3. छह बहने।

4. दो बहने। 5. दो भाई। 6. सात दिनों तक काम न करना।

7. तीन दिनों तक शोक सभा में शामिल न होना, खटाई न खाना, मेहमान से बातचीत न करना।

विभिन्न देशों की लोक कथाओं के अभिप्रायों में कुछ समानताएँ पाई जाती हैं। अभिप्रायों की समानता लोक कथाओं की मूलभूत एकता को प्रमाणित करती है।

मिज़ो लोक कथाओं में मिले अभिप्रायों से अनुमान लगाया जा सकता है कि मानव मन में अज्ञात के प्रति जानने की इच्छा और जिज्ञासा बहुत प्रबल है। वे यह सोचते हैं कि इस संसार का सृष्टिकर्ता कोई है, जो बहुत ही शक्तिशाली है वे निरंतर उसे जानने की कोशिश में लगे रहते हैं, किन्तु इसका समाधान असंभव है इसलिए इनकी लोक कथाओं में भी कभी वे 'पुवाना' को इस जगत का सृष्टिकर्ता मानते हैं और उसकी पूजा करते हैं, तो कभी जल देवता, सूरज देवता तथा नभ देवता होने का विश्वास करते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

संदर्भ सूची :-

1. मिज़ो literature – B. Lalthanga
2. Mizo Folk tales – RL. Thanmawia
3. Mizo History – B. Lalthangliana
4. Pi Pu Zunleng – B.Lalthangliana
5. An Introduction To Mizo Literature – Dr.Laltluangliana Khiangte

•